# आक्रमण के सामाजिक, मनोवैज्ञानिक तथा भौतिक कारण।
# Social, Psychological & Physical Causes of Aggression.

आक्रमण को उत्पन्न करने में कई प्रकार के सामाजिक तथा भौतिक कारकों का हाथ होता है। इस संदर्भ में निम्नलिखित कारक महत्वपूर्ण हैं

1. **शारीरिक उत्तेजन तथा आक्रमण (Physical arousal & aggration):** जब व्यक्ति क्रोध की अवस्था में होता है तो उस समय शारीरिक उत्तेजन आक्रमण तथा उग्रता को उत्पन्न करने में सफल होता है। जिलमैन आदि (1972) ने अपने अध्ययन में पाया है कि शारीरिक उत्तेजन के कारण केवल ऐसे प्रयोज्यों में आक्रमणशील व्यवहार देखा गया, जिन्हें संघाधीन (confederati) द्वारा क्रोधित बताया गया।

2. **कामुक उत्तेजन तथा आक्रमण (Sexual arousal & aggression):-** शारीरिक आवेश के साथ-2 कामुक उत्तेजन भी आक्रमण को जन्म देता है लेकिन सभी परिस्थितियों में समान आक्रमण नहीं होता है। अधिक तीव्र उत्तेजन की अवस्था में तीव्र आक्रमण देखा जाता है। हल्का उत्तेजन से हल्का आक्रमण उत्पन्न होता है। जिलमैन, 1978 ने अपने अध्ययन में पाया कि फिल्म के रूप में कामुक उत्तेजनाओं (erotic stimuli) के कारण प्रयोज्यों में आक्रमणशील व्यवहार बढ़ गया। कुछ अध्ययनों से यह भी पता चलता है कि कामुक उत्तेजन से प्रभावित पुरुष, स्त्रियों के प्रति बलात्कार (rape) के रूप में आक्रमणकारी व्यवहार करते हैं। (Malamuth & Spencer, 1980.

3. **औषधि तथा मद्यसार से उत्पन्न उत्तेजन (Arousal from drug and alcohol):** औषध तथा मद्यसार से उत्पन्न उत्तेजन से उत्पन्न उत्तेजन के कारण आक्रमण विकसित होता है। लेकिन इसके विपरीत दूसरा विचार यह है कि ऐसी स्थिति में व्यक्ति शिथिल पड़ जाता है, जिससे आक्रमण घट जाता है या बाधित हो जाता है। टेलर तथा गैमन (1975) ने अपने अध्ययन में देखा कि जिन प्रयोज्यों को अधिक मात्रा में Alcohol का सेवन किया उनमें आक्रमण का व्यवहार अधिक पाया गया, जिन प्रयोज्यों को कम मात्रा में अल्कोहल दिया गया

उनमें आक्रमण का स्तर उन प्रयोज्यों के आक्रमण से नीचा था, जिनको अल्कोहल नहीं दिया गया था। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि अल्कोहल की अल्प मात्रा का निषेधन-प्रभाव व्यक्ति पर पड़ता है।

4. **ताप तथा शोरगुल (Heat & noise):** ⇒ Griffitt & Veitch 1971 ने अपने अध्ययन में पाया है कि ताप बढ़ने से दूसरों के प्रति वैर-भाव बढ़ गया, कुछ अध्ययनों से विपरीत परिणाम प्राप्त हुए। Baron (1972) ने पाया कि 90° से 95° F के ताप में प्रयोज्यों ने अधिक आक्रमण का प्रदर्शन किया। अनेक अध्ययनों से भी पता चला है कि शोरगुल से उत्तेजन उत्पन्न होता है और यह उत्तेजन आक्रमण को बढ़ा देता है, लेकिन इसके लिए प्रवणता कारक (Predisposing factor) यथा आक्रमणशील फिल्म देखना या दूसरे व्यक्ति द्वारा क्रोधित हो जाना आवश्यक है।

5. **अवैयक्तिकता (Deindividuation):** ⇒ कभी-2 यह भी देखने को मिलता है कि गुमनामी (anonymity) या अवैयक्तिता आक्रमण को बढ़ा देती है। गुमनामी की स्थिति में आत्मबोध घट जाता है, दूसरों द्वारा नकारात्मक मूल्यांकन का भय दूर हो जाता है और व्यक्ति असामाजिक, अनैतिक तथा आवेगी व्यवहारों के लिए अधिक उपयुक्त हो जाता है।

6. **प्रत्यक्ष छेड़-छाड़ (Direct Provocation):** ⇒ आक्रमण, कलह या हिंसा का एक कारण छेड़-छाड़ है। बच्चों को छेड़ने पर वह क्रोधित हो जाते हैं और तोड़-फोड़ करने लगते हैं। वयस्कों में भी इस तरह के व्यवहार देखे जाते हैं। गाली तथा अपमान के कारण वे क्रोधी बन जाते हैं तथा आक्रमणकारी व्यवहार करने लगते हैं। अध्ययनों में देखा गया कि जिन प्रयोज्यों को शारीरिक पीड़ा पहुँचाया गया, उनमें आक्रमणकारी व्यवहार अधिक पाया गया। यहाँ यह भी ध्यान रखना चाहिए कि दूसरे व्यक्ति द्वारा आक्रमण की योजना का विचार उत्पन्न करता है।

classmate
Date
Page

7. **धावा (Attack)** :⇒ आक्रमण तथा हिंसा का एक कारण धावा है। अध्ययनों से पता चलता है कि जब व्यक्ति की जान जोखिम में डाल दिया जाता है तो वह अपनी जान बचाने के लिए आक्रमणकारी बन जाता है। धावा का शिकार होने वाला व्यक्ति प्रतिकार (retaliation) के रूप में धावा करने वाले के प्रति आक्रमण व्यवहार करने लगता है।

8. **कुंठा एवं निराशा (Frustration)** :⇒ आक्रमण तथा हिंसा का एक मौलिक कारण कुंठा एवं निराशा भी है। Barkar(1941) ने बच्चों पर अध्ययन करके प्रमाणित किया कि आक्रमण तथा हिंसा का महत्त्वपूर्ण कारण ~~हिंसा~~ ~~एवं~~ निराशा है। निराशा उत्पन्न करने वाले या धावा करने वाले व्यक्ति के प्रति आक्रमणशील व्यवहार करने के लिए प्रोत्साहित होते हैं। डोलार्ड आदि (1939) ने यहाँ तक कहा है कि "आक्रमण सदा निराशा का परिणाम होता है।" दूसरे शब्दों में "Aggression is always consequence of frustration"

9. **व्यक्तित्व कारक (Personality factors)** :⇒ आक्रमण को उत्पन्न करने में व्यक्तित्व कारकों का भी हाथ होता है। Bandura(1973) के अनुसार अपराध व्यवहार का एक प्रधान कारण निम्न बुद्धि एवं मस्तिष्क की संरचना में दोष होने के कारण भी आक्रमणशील प्रवृति विकसित होती है। हिंसा का एक कारण केन्द्रिय स्नायु मंडल (CNS) की दुष्क्रियता (dysfunction) है। इसी तरह Hans toch(1969) ने अपने अध्ययन के आधार पर पाया कि

(क) जो लोग असुरक्षा तथा आत्मशक्ति की कमी के भावों से पीड़ित होते हैं, वे आक्रमणकारी व्यवहार अधिक करते हैं। ऐसा करके वे असुरक्षा एवं अयोग्यता के भाव को छिपाने तथा आत्म-सम्मान को बढ़ाने का प्रयास करते हैं।

(ख) जो लोग परपीड़क (Sadists) होते हैं वे आक्रमण की प्रवृति अधिक रखते हैं तथा आक्रमणशील व्यवहार करने में आनंद का अनुभव करते हैं। इसी तरह जो लोग आत्म रक्षक होते हैं

वे आक्रमणशील व्यवहार अधिक करते हैं। ऐसे लोग इस भय से कि कहीं दूसरे लोग उन पर आक्रमण न कर दें, पहले ही वे उन पर आक्रमण कर बैठते हैं। इसी तरह व्यक्तित्व के ऐसे शीलगुण हैं, जो पुरुष या स्त्री को आक्रमण की ओर झुका देते हैं। जिन लोगों को सामाजिक अस्वीकृति (Social adjustment) का भय नहीं होता है वे अधिक आक्रमणशील होते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि आक्रमण तथा उग्रता के अनेक कारण हैं। अतः आक्रमणशील व्यवहार की समुचित व्याख्या किसी एक कारण के आधार पर संभव नहीं है। एक आक्रमणशील या उग्र व्यवहार की उत्पत्ति में एक से अधिक कारकों या कारणों का हाथ हो सकता है।

— ० —